International Journal of Applied Research 2021; 7(8): 457-458

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(8): 457-458
www.allresearchjournal.com
Received: 17-07-2021
Accepted: 19-08-2021

डॉ0 नीलम यादव
प्रवक्ता ललित कला, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जहाजपुल, हिसार, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 नीलम यादव
प्रवक्ता ललित कला, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जहाजपुल, हिसार, हरियाणा, भारत

पानीपत के जैन मन्दिरों में स्थापित मूर्तियाँ

डॉ0 नीलम यादव

प्रस्तावना:

हरियाणा के पानीपत शहर में स्थापित जैन मन्दिरों में विभिन्न माध्यमों व तकनीकों से बनी मूर्तियाँ व्याप्त हैं। इन मूर्तियों में से कुछ की प्राचीनता 14वीं शताब्दी की है। इनमें एकल तीर्थंकर त्रितीर्थकर व पंच तीर्थंकर के रूप में जैन तीर्थंकरों को दिखाया गया है। यह मूर्तियाँ उभार व ठोस पद्धति से बनी हुई हैं। जैन तीर्थकरों को दो आसनों में दिखाया गया है। खड्गासन व पद्मासन जैन मूर्तियों पर अंकित चिन्ह से जैन तीर्थंकरों को पहचाना जा सकता है। मूर्तियों का कलात्मक सौंदर्य अनुपम है।

पानीपत एक ऐतिहासिक नगर है क्योंकि इसी स्थान पर पानीपत के तीनों युद्ध लडे गए थे। यह दिल्ली से 90 कि0 मी0 दूर राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 1 पर स्थित है। पानीपत एक समृद्ध व विकसित जिला है। इस जिलें में कुल पाँच मन्दिर हैं। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन मौहल्ला, पानीपत श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर (छोटा), जैन मौहल्ला, पानीपत श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मेन बाजार, पानीपत श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, धुनीवाला श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पानीपत है। पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन मौहल्ला, पानीपत जिले का सबसे प्राचीन मन्दिर है। यह 550 वर्ष प्राचीन है। इस मन्दिर की लम्बाई व चौडाई 250′ X 100′ है। इस मन्दिर में दो वेदी हैं। हरियाणा में स्थित जैन मन्दिरों में से यह मन्दिर विशेष है क्योंकि इस मन्दिर में वेदी पर चारों ओर तीन परिक्रमाएँ हैं। इस मन्दिर की मुख्य वेदी पर चारों तरफ मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं तथा इनकी संख्या 159 है। इस मन्दिर में स्थापित तेरह मूर्तियाँ 14 वीं0 शताब्दी की हैं। इस बात का प्रमाण मूर्तियों पर अंकित वीर् सम्वत् है। यह मूर्तियाँ चन्द्रप्रभु, पार्श्वनाथ व महावीर तीर्थंकरों की हैं। इनमें से मुख्य मूर्तियों का वर्णन इस प्रकार है। पार्श्वनाथ प्रतिमा कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर है। इस मूर्ति की विशेषता यह है कि यह 1008 फनयुक्त है अर्थात इस मूर्ति में साँप के 1008 फन दिखाए हैं। यह मूर्ति काले पाषाण से निर्मित है। 14वीं0 शताब्दी की बनी यह मूर्ति 18′′ ऊँची तथा 9′′ चौड़ी है। तीर्थंकर की मूर्ति में आनुपातिक स्थिति व मूर्ति की चमक विशिष्ट है। इस मूर्ति पर वीर् सम्वत् 1428 अंकित है। पार्श्वनाथ मूर्ति में पार्श्वनाथ को पद्मासन में ध्यानवस्था में दिखाया गया है। ध्यानास्थ तीर्थंकर का चेहरा अण्डाकार धनुषाकार भौहें, नाक खड़ी अधखुली आँखें, लम्बी भुजाएं है। चन्द्रप्रभु मूर्ति पद्मासन चन्द्रप्रभु की है क्योंकि इस पर चन्द्र चिन्ह अंकित है। यह मूर्ति संगमरमर से बनी हुई है। इसकी ऊँचाई 14′′ तथा चौडाई 9′′ है। इस प्रतिमा पर वीर सम्वत् 1442 अंकित है।[21] यह प्रतिमा भी 14 वीं शताब्दी की है। नेमिनाथ प्रतिमा मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा है। अर्थात सबसे पहले इस प्रतिमा की स्थापना की गई थी इसके पश्चात् अन्य प्रतिमाओं को मन्दिर में समय–2 पर स्थापित किया गया था। इस प्रतिमा के पत्थर का रंग स्लेटी है जो कि अपने आप में एक भिन्नता है अर्थात बहुत कम प्रतिमाएँ इस रंग की होती हैं। इस प्रतिमा के लक्षण अन्य जैन तीर्थंकरों के समान ही दृष्टिगोचर होते हैं। हम केवल पीठिका पर अंकित चिन्ह द्वारा ही इसके तीर्थंकरों को पहचान पाते हैं। इसकी ऊँचाई 21 ईंच व चौडाई 18 ईंच है। यह प्रतिमा लगभग 500 वर्ष प्राचीन है। पद्मप्रभु प्रतिमा मुख्य वेदी के तृतीय फलक पर स्थापित है। पूर्व दिशा में मुख की हुई इस प्रतिमा की पीठिका पर कमल का चिन्ह अंकित है जिसे हम पद्मप्रभु की प्रतिमाओं में पाते हैं। इसमें तीर्थंकर पद्मासन में ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे दिखाए गए हैं। इसमें तीर्थंकर को आनुपातिक दृष्टि से उचित बनाया है। यह प्रतिमा श्वेत पाषाण की बनी हुई है। इसकी लम्बाई 9 ईंच व चौडाई 6 ईंच मापी गई है। यह प्रतिमा 1442 वीर सम्वत् में बनी हुई है अर्थात यह प्रतिमा 14वीं शताब्दी की है। इस मन्दिर में मुख्यतः पार्श्वनाथ की चार पाषाण प्रतिमाएँ हैं जिनमें सभी प्रतिमाएँ लगभग 500 वर्ष प्राचीन हैं। इन प्रतिमाओं में एक मूलनायक पार्श्वनाथ सहित अन्य तेईस तीर्थंकरों की चौबीसी है। यह एक संगमरमर के टुकडे पर बनी पाषाण प्रतिमा है। इस प्रतिमा को उभार पद्धति (Relief Technique) द्वारा बनाया गया है। इस प्रतिमा में पत्थर की दो–तीन सतहों को उभारा गया है।

मूलनायक पार्श्वनाथ को विशेष उभार देकर विशिष्ट ध्यान आकृष्ट किया गया है। अन्य दो सतहों को कम उभारा गया है इससे उन विषयों की गौणता स्पष्ट होती है। ऋषभनाथ श्वेत संगमरमर से बनी अनुपम प्रतिमा है। इस मूर्ति में तीर्थंकर को पद्मासन में ध्यानवस्था में दिखाया गया है। ध्यानास्थ तीर्थंकर का चेहरा अण्डाकार धनुषाकार बौहें, नाक खड़ी अधखुली आँखें, लम्बी भुजाएं है। इसमें पंचतीर्थंकरों के दर्शन होते हैं। मूलनायक तीर्थंकर ऋषभनाथ व अन्य दो तीर्थंकरों को पद्मासन में दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य दो तीर्थंकरों को खड्गासन में बनाया गया है। यह उभार पद्धति में बनी प्रतिमाओं में विशिष्ट स्थान रखती है। इसमें प्रमुखता के आधार पर तीर्थंकरों को स्थान व उभार दिया गया है। इस प्रतिमा पर बैल का चिन्ह अंकित किया गया है, इसलिए हम कह सकते हैं कि इसमें मूलनायक के रूप में ऋषभनाथ तीर्थंकर हैं। इस प्रतिमा की ऊँचाई 10'' व चौड़ाई 6'' है। इसकी प्राचीनता लगभग 500 वर्ष है। इसके अतिरिक्त एक अन्य उभार पद्धति द्वारा पंचतीर्थंकर प्रतिमा श्वेत पाषाण पर बनाई गई है। इसमें मूलनायक पार्श्वनाथ को खिले हुए कमल के आसन पर सात फन वाले छत्र के नीचे बैठा दिखाया गया है। इस प्रतिमा में चार गौण तीर्थंकर खड्गासन व दो पद्मासन में दर्शाए गए हैं। इस मूर्ति में एक साथ पाँच तीर्थंकरों को दिखाया गया है। मुख्य आसन पर पार्श्वनाथ को दर्शाया गया है। यह मूर्ति अपने अनूपम सौन्दर्य के कारण प्रसिद्ध है। मूर्ति को संतुलित तरीके से बनाया गया है।

अंत में हम कह सकते हैं कि पानीपत शहर के जैन मन्दिरों में अनुपम मूर्तियाँ व्याप्त हैं। यह मूर्तियाँ विभिन्न पत्थरों व तकनीकों के द्वारा बनी हुई है। जैन मन्दिरों में स्थापित जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ अपनी प्राचीनता व कलात्मक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Muni Kantisagara. Khandaharo ka vaibhava (hindi), 2nd Ed. Banaras, 1959, p.59.
2. Mccrindle JW. Ancient India As Described by Megasthenes And Arrian, Revised 2nd Ed, Calcutta, 1960, PP98.
3. Jain, Jyoti Prasad- The Jaina Sources of the History of AncientIndia, Delhi, 1964, P.105
4. Roy AKA. History of the Jainas, New Delhi, 1984, P.75.
5. भारतीय कला (जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ), पृ0–238
6. श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पुण्योदय तीर्थं हाँसी की विवरणीकानुसार उपाध्याय, वासुदेव–उपरोक्त, पृ0–213
7. श्रीवास्तव, पंकज लता–हिन्दू तथा जैन प्रतिमा विज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवम् पुरातत्व तथा संस्कृत, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ–364